अपभ्रंश का विरह-काव्य और प्रकृति ९६
(बारहमासा ९८, अपभ्रंश विरह-काव्य में प्रकृति का अन्य रूप ९९)
प्रारम्भिक हिन्दी-काव्य में विरह-भावना १००
(पूर्वराग १००, मान विप्रलम्भ १०८, प्रवास १०६, करुण विप्रलम्भ ११६)
भक्ति-काव्य में विरह-भावना (जायसी के काव्य में) १२०
(पूर्वराग १२१, मान विप्रलम्भ १२२, प्रवास १२३, करुण विप्रलम्भ १२७)
अन्य सगुण-निर्गुण काव्य में विरह-भावना १२७
(पूर्वराग १२८, मान १३०, प्रवास १३८, करुण विप्रलम्भ १४१)
रीतिकालीन विरह-काव्य और उसकी पूर्व परम्परा १४४

द्वितीय खण्ड—विषय-विवेचन

प्रथम अध्याय : प्रारम्भिक आधुनिक हिन्दी-काव्य में विरह-भावना १५७
आधुनिक युग का प्रारम्भ, युग चेतना और भारतेन्दुयुगीन कविता १५७
आधुनिक युग में उत्तर मध्यकालीन विरह-भावना का अवशेष (भारतेन्दु युग) १६४
(पूर्वराग १६६, मान १७०, प्रवास १७३, करुण विप्रलम्भ अथवा संबंध विच्छेद १७८, षट्ऋतु-वर्णन १८०)
द्वितीय अध्याय : सांस्कृतिक प्रबन्ध-कविता में विरह-भावना १८९
रामनरेश त्रिपाठी २००
हरिऔध २०६
मैथिलीशरण गुप्त २२०
जयशंकर प्रसाद २५७
निराला २६६
डा० बलदेवप्रसाद मिश्र २६९
द्वारकाप्रसाद मिश्र २७५
हरदयालुसिंह २८४
रामानन्द तिवारी शास्त्री २८८
गुरु भक्तसिंह २९४
विरह अथवा विरहाभाव २९५
निष्कर्ष ३०२
तृतीय अध्याय : छायावादी काव्य में विरह-भावना ३०२
रहस्य भावना का उद्गम और उसकी भारतीय परम्परा तथा आधुनिक रहस्यवाद ३०६
आधुनिक रहस्यवाद ३१०
रहस्य भावना के विविध संस्थान ३१०
प्रसाद रहस्यवादी विरहानुभूति ३१३
प्रसाद लौकिक विरहानुभूति ३२१
महादेवी की विरहानुभूति ३२७
सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में विरहानुभूति ३४२
निराला के काव्य में विरहानुभूति ३६३
पार्थिव विरह-भावना ३६६
प्रकृति के प्रतीक रूप में व्यक्त हुई विरह-भावना ३७२
निराला के काव्य में रहस्यवादी विरह-भावना ३७८
चतुर्थ अध्याय : छायावाद-परवर्ती हिन्दी-काव्य में विरह-भावना ३८२
बच्चन ३९४
नरेन्द्र शर्मा ४१२
भगवतीचरण वर्मा ४१७
शिवमंगलसिंह 'सुमन' ४२४
अंचल ४३१
अज्ञेय ४३२
गिरिजाकुमार माथुर ४३६
धर्मवीर भारती ४५७
उपसंहार ४६३
ग्रन्थानुक्रमणिका